ISSN:2583-8849



आरती चित्तौड़ा
उदयपुर (राजस्थान)

"एक कदम आगे"

आसमान की तरफ मुस्कुराते हुए मौलिक दादाजी न जाने किस से बात कर रहे थे। रोज सुबह से शाम तक अपनी चेयर पर बैठकर इंग्लिश की किताबें पढ़ते रहते हैं। चाय, नाश्ता और खाने के लिए ही उठते हैं। फिर चेयर पर बैठकर किताबें पढ़ने लग जाते हैं। साथ में रहने वाला, लगभग 15 से 16 वर्ष का छोटू उनके सारे काम करता है ।दादाजी को देखकर उससे रहा नहीं गया , और उसने पूछ लिया , " क्या बात है, दादा जी , आप किस से बात कर रहे हैं? " उन्होंने कहा - " आ बेटा मेरे पास बैठ मैं बताता हूँ... देख, ऊपर तेरी दादी है। मैं उसको रोज तो डिस्टर्ब नहीं करता , पर जब मन बहुत उदास होता है , तो मैं उससे बात कर लेता हूंँ। वह हमेशा काम में मुझसे आगे रहती थी। हम दोनों साथ में कॉलेज में पढ़ाने जाते थे। वह इतनी फुर्ती से काम करती। मैं नहा - धोकर तैयार होता जब तक वह रेडी हो जाती और दोनों का टिफिन पैक कर देती थी। बाजार से खरीदी करनी हो, रिश्तेदारों के यहां जाना हो या घर पर छोटा सा गेट टूगेदर हो हर काम में परफेक्ट थी। मैं उसको हमेशा कहता, " तुम मुझसे एक कदम आगे ही रहती हो, और रहा भी करो, अच्छा लगता है। " पर देख छोटू इसी एक कदम आगे ने मुझे अकेला छोड़ दिया। वह मुझसे पहले भगवान के पास चली गई। आज उसकी यही बात याद आ गई। बेटा, अर्जुन तो विदेश में जाकर बस गया और मैं बूढ़ा अकेला कभी अपने अकेलेपन से प्यार करता हूँ, कभी गुस्सा आता है ,कभी झुंझलाहट होती है तो कभी तेरी दादी से शिकायत कर देता हूं।" छोटू ने दादाजी का हाथ अपने हाथ लिया और कहा, " क्यों चिंता करते हो मैं हूं ना आपके साथ।" दादाजी ने आसमान की तरफ देखा और मुस्कुरा कर कहने लगे - " तुम तो बहुत खुश होगी ना हमेशा की तरह आगे रहने वाली वहां भी मुझसे आगे निकल गई।" छोटू यह देख और सुन रहा था। धीमे से मुस्कुराते हुए जाने कैसे अचानक दादाजी का चश्मा भीग गया।



ISSN:2583-8849

"रेपुटेशन"

ओटी में अफरा तफरी का माहौल था। एक के बाद एक नर्स और डॉक्टर अंदर से बाहर हो रहे थे।मिसेज शर्मा की धड़कन बढ़ती जा रही थी। बार-बार भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि हे, भगवान हर सांस की डोर आपके हाथ में है। पास में खड़ा बेटा मां के चेहरे को देखकर घबरा गया और वह डॉक्टर के पास गया उसने पूछा - "पापा ठीक हैं ना? उनका ऑपरेशन हो गया?"। डॉक्टर ने बस इतना ही कहा-" सब ठीक है हम कोशिश कर रहे हैं, उन्हें वेंटिलेटर पर लिया है"। मिसेस शर्मा ने यह बात जैसे ही सुनी घबरा कर डॉक्टर से कहने लगी - "ऐसा क्या हुआ मेरे पति को, हर्निया का तो ऑपरेशन था। वेंटिलेटर पर लेने की जरूरत क्यों पड़ी? डॉक्टर जवाब देते इसके पहले ही नर्स ने तुरंत अंदर बुला लिया। मिसेस शर्मा की घबराहट और बढ़ती जा रही थी। सारे वी आई पी कांटेक्ट डायल कर लिए यह पता लगाने के लिए कि अंदर क्या हो रहा है।



मिसेस शर्मा ने अपने बेटे को बताया कि नर्स से बात हुई वह बता रही थी कि आज चार ओटी थी। सभी को एक साथ एनेस्थीसिया दिया गया। बेटा - उसके बाद पापा को क्या हुआ? डॉक्टर अभी भी कुछ स्पष्ट नहीं बता रहे सुबह से दोपहर के तीन बज चुके थे। जूनियर डॉक्टर जा चुके थे और सीनियर की देखरेख में इलाज चल रहा था। सब को तसल्ली थी कि अब डॉक्टर संभाल लेंगे। मिसेस शर्मा का मन शंका आशंका से घबरा गया। जिद पकड़ ली कि मुझे मेरे पति से मिलना है। डॉक्टर ने बहुत समझाया पर वह डटी रही। जैसे- तैसे उन्हें बाहर से ही देखने की अनुमति दी गई। वह चेहरा देखकर समझ गई थी कि उनके हमसफर का साथ इतना ही है। डॉक्टर केवल उनके शरीर के साथ जबरदस्ती कर रहे हैं। तभी पास वाले पेशेंट की सांस उखड़ने लगी । डॉक्टर आपस में बात कर रहे थे , कि आज एनेस्थीसिया के समय किसकी ड्यूटी थी। यह सब क्या हो रहा है? अस्पताल की रेपुटेशन का सवाल है। मौत और रेपुटेशन के बीच जंग जारी थी।